भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

"कबीर का रहस्यवाद"

कबीर के रहस्यवाद को समझने या जानने से पहले यह देखना होगा कि रहस्यवाद क्या है? 'रहस्यवाद' को विद्वानों ने भिन्न-भिन्न रूप में परिभाषित करने का प्रयास किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, "जहाँ कवि उस अनन्त और अज्ञात प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अनेक प्रकार की व्यंजना करता है, उसे रहस्यवाद कहते हैं।" डॉ० श्यामसुन्दरदास का कथन है, "चिन्तन के क्षेत्र का ब्रह्मवाद कविता के क्षेत्र में जाकर कल्पना और भावुकता का आधार पाकर रहस्यवाद का रूप पकड़ता है।" डॉ० रामकुमार वर्मा के मतानुसार, "रहस्यवाद जीवात्मा की उस अन्तर्हित प्रवृत्ति का प्रकाशन है, जिसमें वह दिव्य और अलौकिक शक्ति से अपना शान्त और निश्छल सम्बन्ध जोड़ना चाहती है और यह सम्बन्ध यहाँ तक बढ़ जाता है कि दोनों में कुछ भी अन्तर नहीं रह जाता है।" छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद के अनुसार, "अपरोक्ष अनुभूति समरसता तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के द्वारा 'अहं' का 'इदम्' से सुमन्वय कर देना ही रहस्यवाद कहलाता है।" महादेवी वर्मा के बुधनानुसार, "अपनी सीमा को असीम तत्व में खो देना ही रहस्यवाद है।" उपर्युक्त विद्वानों के मत के आधार पर कहा जा सकता है कि रहस्यवाद वह है, जो इस दृश्य जगत में व्याप्त उस अदृश्य एवं अगोचर सत्ता से आत्मा का रागात्मक सम्बन्ध स्थापित होता है। इस तरह रहस्यवाद के अन्तर्गत एक कवि उस अदृश्य सत्ता के प्रति अपने ऐसे भावोद्गार को व्यक्त करता है, जिसमें सुख-दुःख, आनन्द-विषाद, संयोग-वियोग आदि घुले-मिले रहते हैं।

कबीर का सारा रहस्यवाद एकेश्वरवाद और उनकी सारी मान्यताएँ उनकी एकात्ममूलक

दृष्टि से उत्पन्न है। वे आत्मा और परमात्मा को एक मानते हुए अपनी रहस्य परक अभिव्यक्तियों में सारी सृष्टि को एक और आत्मवत अनुभव करते हैं। यह मान्यता है कि रहस्यवाद कबीर में पहले से ही भावात्मक और साधनात्मक रहस्य के मेल के रूप में उपस्थित है। कबीर अपने रहस्यवाद से अलौकिक रहस्यानुभूति को लौकिक शब्दों में बाँधने का प्रयत्न करते हैं। अलौकिक श्रृंगार और अलौकिक प्रेम का अन्तर उनके यहाँ छिपा नहीं है। रहस्यवादी प्रतीक के आवरण में प्रेम और अनुग्रह या ईश्वर-जीव दोनों के पारस्परिक प्रेम का चित्रण है। इसमें पत्नी व प्रेयसी रूप जीवात्मा का परमात्मा से विवाह, मिलन, आत्मसमर्पण व तद्राकारता का उल्लास व्यंजित है— "बहुत दिनन थैं मैं प्रीतम पाये
भाग बड़े घरि बैठे आये
मंगलचार मांहि मन राखौं, राम रसाइंण रसना चाखौं
मंदिर माहि भया उजियारा, लै सूती अपना पीव पियारा
मैं रनिरासी जे निधि पाई, हमहिं कहा यहु तुमहिं बड़ाई
कहै कबीर मैं कछु न कीन्हा, सखी सुहाग राम मोहि दीन्हा।"

यहाँ पर कबीर दाम्पत्य-प्रेम एवं रहस्यवादी भावना का भावविभोर करने वाला चित्र प्रस्तुत करते हैं। कबीर निर्गुण एवं निराकार ब्रह्म के उपासक हैं। उनकी दृष्टि में उनके इष्टदेव का न कोई रूप है और न ही कोई आकार है, फिर भी वह सर्वत्र विद्यमान है। सारी दुनिया में व्याप्त है। न कोई भी ऐसा स्थान नहीं है, जहाँ उसका अस्तित्व न हो। कबीर का यह आस्तिक विचार ही उनके इष्टदेव के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करता है। इस जिज्ञासा में लीन होकर कबीर स्वयं ही चिन्तन करते हुए जान पड़ते हैं—

"सो कछु चारहु पंडित लोई
जाकै रूप न रेष वरण नहीं कोई
उपजै प्यंड प्रान कहाँ थैं आवै
मुवा जीव जाई कहाँ समावै

इन्द्री कहाँ कराहि विश्रामा,
सो कत गया जो कहता रामा।"

कबीर कहते हैं कि व्यक्ति के अन्दर जो जीवात्मा राम राम कहता रहता है, वह मरने पर कहा चला जाता है। आदि अनेक प्रश्न कबीर के मन मस्तिष्क में कुतूहल, जिज्ञासा एवं विस्मय की भावना जाग्रत करते रहते हैं जिसके समाधान के लिए कबीर की आत्मा छटपटाती रहती है।

कबीर के रहस्यवाद में अनुभूति की प्रधानता है, जिसके परिणाम स्वरूप कबीर ने आस्तिकता, जिज्ञासा, माधुर्य-भावना, अन्तर्मुखी साधना, विरह-मिलन आदि का चित्रण बड़े मनोयोग के साथ किया है। उसका परिचय मन, बुद्धि एवं वाणी से प्राप्त करना सर्वथा असम्भव है। कबीर उस अज्ञात सत्ता को और अधिक जानने के लिए गुरु की शरण में पहुँचते हैं—

"सतगुरु मारया बाण भरि, धरि करि सूधी मूठि।
अंग उघाड़े लागिया, गई दया सूं फूटि॥"

कबीर उस अव्यक्त सत्ता के महत्व का वर्णन करते हुए कि वह अव्यक्त सत्ता एक ऐसा रसायन है, जिसके स्पर्श से शरीर कंचन बन जाता है—

"सबै रसायण मैं किया, हरि सा और न कोइ।
तिल इक घट में संचरै, तौ सब तन कंचन होइ॥"

कबीर के रहस्यवाद पर सूफी रहस्यवादी कवियों का प्रभाव पर्याप्त मात्रा में दृष्टिगोचर होता है। इसी कारण कबीर दाम्पत्य-भाव को लेकर विरह एवं मिलन के चित्र करने में सफल सिद्ध हुए हैं। सूफी कवियों ने फारसी पद्धति के आधार पर आत्मा को पुरुष और परमात्मा को स्त्री रूप में माना है, जबकि कबीर ने भारतीय पद्धति के आधार पर आत्मा को स्त्री एवं परमात्मा को पुरुष रूप में स्वीकार किया है। कबीर की जीवात्मा कहती है, बहुत दिनों से प्रियतम मैं तुम्हारी बाट (रास्ता) देख रही हूँ।

भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

तुमसे मिलने के लिए मेरा हृदय तरस रहा है और तुम्हारे विरह में मेरा अन्तःकरण बेचैन है —

"बहुत दिनन की जोवती, बाट तुम्हारी राम।
जिव तरसै तुझ मिलन कूँ, मनि नहीं विश्राम॥"

कबीर की विरहिणी जीवात्मा उस अव्यक्त परमात्मा के दर्शन के लिए बेचैन है। इसलिए कबीर की जीवात्मा पत्नी भाव में कहती है, हे। मेरे प्रियतम राम, अब मैं अपने हृदय से तुम्हें जाने नहीं दूँगी। आप जैसे चाहें मेरे बन जाइए-

"अब तोहिं जान न दैहूँ राम पियारे।
ज्यूँ भावै त्यूँ होहू हमारे॥"

कबीर अपने रहस्यवाद में माया को परमात्मा के मिलन में बाधक माना है। यह माया उस अव्यक्त एवं अगोचर परमात्मा का साक्षात्कार सरलता एवं सुगमता से नहीं होने देती है। यह माया उसके मार्ग में अनेक विघ्न-बाधा डालती है और ~~साधक~~ जिसके कारण साधना का पथ कठिन हो जाता है। इसीलिए कबीर माया को 'महाठगिनी' कहकर कर आत्मा को भ्रमित करने वाली बताया है। यह माया स्वभाव से व्यभिचारिणी, मोहिनी है और सभी जीवों को चक्रों में डालती रहती है —

"माया रेसी मोहिनी भाई,
जैसे जिय तैसे डहकाई।"

कबीर के अनुसार इस माया के दो प्रमुख रूप — कंचन और कामिनी हैं। इस दोनों रूप में यह सबको ठगती रहती है। इस माया के कारण ही मनुष्य को काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह आदि विकार सताते रहते हैं। रहस्यवाद की अगली स्थिति वह जब साधक माया-मोह पर विजय प्राप्त करके अपने साधना के पथ में आगे बढ़ता है और सांसारिक प्रपंचों से ऊपर उठकर आध्यात्मिक जगत में पहुँच जाता है। कबीर इस स्थिति का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है —

"कौतुक दीठि देह बिन, रवि ससि बिना उजास।"

इस प्रकार कबीर ने उस अव्यक्त-अगोचर परमात्मा के दर्शन का वर्णन बड़ा प्रभावशाली ढंग से किया है। साधक को जब उस परमात्मा का आभास होने लगता है, तब उसके हृदय में ज्ञान की ज्योति निरन्तर जगमगाती रहती है और वह संसार की वास्तविकता को भली-भाँति समझने लगता है।

रहस्यवाद की अन्तिम स्थिति आत्मा और परमात्मा का चिर मिलन है। कबीर ने बड़े ओजस्वी शब्दों में इस अन्तिम स्थिति का वर्णन किया है। इस मिलन की अवस्था का रूपक बाँधते हुए कबीर ने स्वयं को दुलहिन और परमात्मा को प्रियतम कहा है। विवाह के पश्चात जिस प्रकार पति-पत्नी परस्पर मिलते हैं ठीक उसी प्रकार अत्यन्त प्रेमपूर्वक आत्मा और परमात्मा का मिलन हो रहा है—

"बहुत दिनन थे प्रीतम पाए, भाग बड़े घरि बैठे आए।
मन्दिर माँहि भया उजियारा, लै सूती अपना पिय प्यारा॥"

इस प्रकार पूर्ण एकाकार की स्थिति का उल्लेख करते हुए कबीर स्पष्टतः कहते हैं—

"राम कबीरा एक भए हैं, कोउ न सकै पछाणि।"

आत्मा-परमात्मा के मिलन का आनन्द का वर्णन कबीर ने विवाह के सांगरूपक के रूप में किया है—

"दुलहनीं गावहु मंगलाचार।
हम घरि आये हो राजा राम भरतार॥
तन रत करि मैं, मन रत करिहूँ, पँचतत बराती।
रामदेव मोरैं पाँहुनैं आये, मैं जोबन मैंमाती॥"

इसके साथ ही आत्मा आनन्द में लीन होने के पश्चात् ब्रह्म के साथ पूर्णतया एकाकार हो जाती है और आत्मा तथा परमात्मा में पूर्णतया तादात्म्य स्थापित हो जाता है। यही रहस्यवाद की अन्तिम स्थिति है, जिसमें आत्मा और परमात्मा, साधक और साध्य तथा जीव और ब्रह्म दोनों एक हो

जाते हैं, दोनों का भेद मिट जाता है और दोनों में पूर्ण अद्वैत की स्थापना हो जाती है। यही कबीर के रहस्यवाद का आत्मा-परमात्मा का भावात्मक तादात्म्य है। कबीर ने साच्चनात्मक रहस्यवाद को अधिक अपनाया है, लेकिन उनके यहाँ भावात्मक रहस्यवाद का अभाव नहीं है। इस प्रकार कबीर के रहस्यवाद में यौगिक साधना का चमत्कार दृष्टिगोचर होता है। कबीर ने अपने सहज अनुभूति के सहारे अव्यक्त एवं अगोचर सत्ता के प्रति अपने रहस्यपूर्ण उद्गार व्यक्त किये हैं।

डॉ० राकेश कुमार
हिन्दी विभाग
शेरशाह महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास